



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दूर-भूमि	18.8.22	4	2-8

अब तक सरसों की विकसित की है 21 उन्नत किस्में

हरिभूमि ब्यूज 11 दिवस

हकृवि ने विकसित की सरसों की दो उन्नत किस्में, हरियाणा के साथ पंजाब, दिल्ली, राजस्थान और जम्मू के किसानों को मिलेगा लाभ

हकृवि के वैज्ञानिकों ने सरसों की दो नई उन्नत किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों का हरियाणा के साथ पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों के किसानों को भी लाभ होगा। विभिन्न तिलहन वैज्ञानिकों की टीम ने सरसों की आरएच 1424 व आरएच 1706 दो नई किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों की अधिक उपज और बेहतर तेल गुणवत्ता के कारण राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुर में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (सरसों) की हुई बैठक में हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, राजस्थान और जम्मू राज्यों में खेती के लिए पहचान की गई हैं।

कुलपति ने वैज्ञानिकों की टीम को दी बधाई



हिसार। कुलपति प्रो. बी.आर. कामोज ने वैज्ञानिकों की टीम के साथ।

उत्पादकता को बढ़ाने में कारगर

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. कामोज ने बताया कि आरएच 1424 किस्म इन राज्यों में समय पर बुवाई और बारशी परिस्थितियों में खेती के लिए जबकि आरएच 1706 जो कि एक नए रूप वर्धित किस्म है, इन राज्यों के विभिन्न क्षेत्रों में समय पर बुवाई के लिए बहुत उपयुक्त किस्म पाई गई है। उपरोक्त सरसों उन्नत वाले राज्यों को उत्पादकता को बढ़ाने में नील का पत्थर खनिज होगी।

139 दिनों में पक्ती फसल

अनुसंधान विदेशक डॉ. जैत राम वर्मा ने बताया कि बारशी परीक्षणों में अब विकसित किस्म आरएच 1424 में लोकप्रिय किस्म आरएच 725 की तुलना में 14 % की वृद्धि के साथ 26 किग्रा प्रति हेक्टेयर की औसत बीज उपज दर्ज की गई है। यह किस्म 139 दिनों में पक जाती है और इसके बीजों में तेल की मात्रा 40.5 प्रतिशत होती है।

आरएच 725 सरसों उगाने वाले राज्यों में लोकप्रिय

विश्वविद्यालय के कृषि महविद्यालय के अधिष्ठाता एवं आनुवंशिकी व पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. एमके पट्टना ने बताया कि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय देश में सरसों अनुसंधान में अग्रणी केंद्र है और अब तक यहां अच्छी उपज बनाने वाली सरसों की कुल 21 किस्मों को विकसित किया गया है। इसमें से यहां विकसित सरसों की किस्म आरएच 725 कई सरसों उगाने वाले राज्यों के किसानों के बीच बहुत लोकप्रिय है।

तिलहन वैज्ञानिकों की मेहनत का परिणाम

सरसों की इन किस्मों को तिलहन वैज्ञानिकों की टीम द्वारा विकसित किया गया है। इस टीम में डॉ. राम अलवार, आरके श्योरण, नीरज कुमार, नवजीत सिंह, विवेक कुमार, अशोक कुमार, सुभाष चंद्र, संकेत पुनिया, शिव कुमार, किशोर मोहन, बनीप कुमार, श्वेत, कौशिक पट्टन, महेश्वर और राजेश्वर सिंह शामिल हैं। कुलपति ने वैज्ञानिकों की इस टीम को बधाई दी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समर उजाला	18.8.22	2	6-8

एचएयू ने सरसों की आरएच 1424 आरएच 1706 किस्में की विकसित

सरसों की दो उन्नत किस्मों में 38 से 40 प्रतिशत ज्यादा है तेल की मात्रा

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के वैज्ञानिकों ने सरसों की दो नई उन्नत किस्में विकसित की हैं। कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि विश्वविद्यालय के तिलहन वैज्ञानिकों की टीम ने सरसों की आरएच 1424 और आरएच 1706 दो नई किस्में विकसित की हैं।

अधिक उपज और बेहतर तेल गुणवत्ता के कारण इन किस्मों को कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुर (राजस्थान) में अखिल भारतीय अनुसंधान परियोजना (सरसों) की हुई बैठक में हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू में खेती के लिए अनुमोदित किया गया है। उन्होंने बताया आरएच 1424 किस्म इन राज्यों में समय पर बुवाई और बरानी परिस्थितियों में खेती के



तिलहन वैज्ञानिकों की मेहनत का परिणाम : कुलपति ने बताया कि सरसों की इन किस्मों को तिलहन वैज्ञानिकों की टीम ने विकसित किया है। टीम में डॉ. राम अवतार, आरके श्यामराज, नीरज कुमार, मनजीत सिंह, विवेक कुमार, अशोक कुमार, सुभाष चंद्र, राकेश पुनिया, निशा कुमारी, विनोद गोपाल, दलीप कुमार, श्वेता, कीर्ति पट्टनय, महावीर और राजवीर सिंह शामिल हैं।

लिए उपयुक्त है। यहाँ आरएच 1706 एक मूल्य वर्धित किस्म है। यह सिंचित क्षेत्रों में समय पर बुवाई

के लिए उपयुक्त है। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि बारानी परीक्षणों में नवविकसित किस्म आरएच 1424 में लोकप्रिय किस्म आरएच 725 की तुलना में 14 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 26 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की औसत बीज उपज दर्ज की गई है। यह किस्म 139 दिनों में पक जाती है और इसके बीजों में तेल की मात्रा 40.5 प्रतिशत होती है। दूसरी किस्म आरएच 1706 में 2.0 प्रतिशत से कम इरूसिक एसिड होने के साथ इसके तेल की गुणवत्ता में सुधार हुआ है, जिसका उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य को लाभ होगा। यह किस्म पकने में 140 दिन का समय लेती है और इसकी औसत बीज उपज 27 क्विंटल हेक्टेयर है। इसके बीजों में 38 प्रतिशत तेल की मात्रा होती है। ब्यूर



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब प्रसार	18.8.22	1	3-4



वैज्ञानिकों की टीम के साथ कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

हकृवि ने विकसित की सरसों की 2 उन्नत किस्में

हिसार, 17 अगस्त (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने सरसों की 2 नई उन्नत किस्में विकसित की हैं।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय के तिलहन वैज्ञानिकों की टीम ने सरसों की आर.एच. 1424 व आर.एच. 1706 2 नई किस्में विकसित की हैं। इनकी अधिक उपज और बेहतर तेल गुणवत्ता के कारण राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुर (राजस्थान) में

अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (सरसों) की हुई बैठक में हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों में खेती के लिए पहचान की गई है।

वैज्ञानिकों की टीम में डॉ. राम अवतार, आर.के. श्योराण, नीरज कुमार, मनजीत सिंह, विवेक कुमार, अशोक कुमार, सुभाष चंद्र, राकेश पूनिया, निशा कुमारी, विनोद गोयल, दलीप कुमार, श्वेता, कीर्ति पट्टम, महावीर और राजबीर सिंह शामिल हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	18.8.22	4	1-5

अनुसंधान • हरियाणा, पंजाब, जम्मू और राजस्थान के किसानों को भी मिलेगा लाभ एचएयू ने विकसित की सरसों की 2 उन्नत किस्में, 14% तक अधिक मिलेगी फसल की पैदावार

भास्कर न्यूज़ | हिस्सार

सरसों की नई किस्म में 40.5 प्रतिशत होगी तेल की मात्रा



हिस्सार। एचएयू कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज वैज्ञानिकों की टीम के साथ।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि बारानी परीक्षणों में नव विकसित किस्म आरएच 1424 में लोकप्रिय किस्म आरएच 725 की तुलना में 14 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 26 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की औसत बीज की उपज दर्ज की गई है। यह किस्म 139 दिनों में फल जाती है और इसके बीजों में तेल की मात्रा 40.5 प्रतिशत होती है। सरसों की दूसरी किस्म आरएच 1706 में 2.0 प्रतिशत से कम इरूसिक एसिड होने के साथ इसके तेल की गुणवत्ता में सुधार हुआ है जिसका उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य को लाभ होगा। यह किस्म पकने में 140 दिन का समय लेती है और इसकी औसत बीज उपज 27 क्विंटल हेक्टेयर है। इसके बीजों में 38 प्रतिशत तेल की मात्रा होती है। सरसों की इन किस्मों को तिलहन वैज्ञानिकों की टीम द्वारा विकसित किया गया है। इस टीम में डॉ. राम अवतार, आर.के. श्योराण, नीरज कुमार, मनजीत सिंह, विवेक कुमार, अशोक कुमार, सुभाष चंद्र, राकेश पुनिया, निशा कुमारी, विनोद गोयल, दलीप कुमार, श्वेता, कीर्ति पट्टन, महावीर और राजबीर सिंह शामिल हैं।

विवि में अब तक
विकसित की गई सरसों
की 21 उन्नत किस्में

विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं आनुवंशिकी व पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय देश में सरसों अनुसंधान में अग्रणी केंद्र है और अब तक यहां अच्छी उपज क्षमता वाली सरसों की कुल 21 किस्मों को विकसित किया गया है। हाल ही में यहां विकसित सरसों की किस्म आरएच 725 कई सरसों उगाने वाले राज्यों के किसानों के बीच बहुत लोकप्रिय है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने सरसों की दो नई उन्नत किस्में विकसित की है। इन किस्मों का हरियाणा के साथ पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू आदि के किसानों को भी लाभ होगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय के तिलहन वैज्ञानिकों की टीम ने सरसों की आरएच 1424 व आरएच 1706 दो नई किस्में विकसित की है। इन किस्मों की अधिक उपज और बेहतर तेल गुणवत्ता के कारण राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुर (राजस्थान) में अखिल भारतीय समाहित अनुसंधान परियोजना (सरसों) की हुई बैठक में हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू आदि में खेती के लिए पहचान की गई है। उन्होंने बताया कि आरएच 1424 किस्म इन राज्यों में समय पर बुवाई आरएच 1706 जोकि एक मूल्य वर्धित किस्म है, इन राज्यों के सिंचित क्षेत्रों में समय पर बुवाई के लिए बहुत उपयुक्त किस्म पाई गई है। उन्होंने कहा कि ये किस्में सरसों उगाने वाले राज्यों की उत्पादकता बढ़ाएंगी। कुलपति ने बताया कि हरियाणा पिछले कई वर्षों से सरसों फसल की उत्पादकता के मामले में देश में शीर्ष स्थान पर है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	18.8.22	2	1-5

एचएयू के विज्ञानियों ने विकसित की सरसों की दो उन्नत किस्में

जागरण संवाददाता, हिंसार- चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विज्ञानियों ने सरसों की दो नई उन्नत किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों का हरियाणा के साथ पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों के किसानों को भी लाभ होगा। तिलहन विज्ञानियों की टीम ने सरसों की आरएच 1424 व आरएच 1706 दो नई किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों की अधिक उपज और बेहतर तेल गुणवत्ता के कारण राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुर (राजस्थान) में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (सरसों) की हुई बैठक में हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों में खेती के लिए पहचान की गई हैं। आरएच 1424 किस्म इन राज्यों में समय पर



कुलपति प्रो. वी.आर. काम्बोज विज्ञानियों की टीम के साथ। पी.आर.ओ.

बुवाई और बारानी परिस्थितियों में खेती के लिए जबकि आरएच 1706 जोकि एक मूल्य वर्धित किस्म है।

यह है सरसों की किस्मों की विशेषताएं : अनुसंधान निदेशक डा. जीत राम शर्मा ने बताया कि बारानी परीक्षणों में नव विकसित किस्म आरएच 1424 में लोकप्रिय किस्म आरएच 725 की तुलना में 14 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 26 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की औसत बीज उपज

दर्ज की गई है। यह किस्म 139 दिनों में पक जाती है और इसके बीजों में तेल की मात्रा 40.5 प्रतिशत होती है। सरसों की दूसरी किस्म आरएच 1706 में 2.0 प्रतिशत से कम इरूसिक एसिड होने के साथ इसके तेल की गुणवत्ता में सुधार हुआ है जिसका उपभोक्तकों के स्वास्थ्य को लाभ होगा। यह किस्म पकने में 140 दिन का समय लेती है और इसकी औसत बीज उपज 27 क्विंटल हेक्टेयर है।

सरसों की अब तक 21 उन्नत किस्में

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं अनुवंशिकी व फ़ैव प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डा. एसके पाहुजा ने बताया कि कृषि विश्वविद्यालय देश में सरसों अनुसंधान में अग्रणी केंद्र है और अब तक यहाँ अकरी उपज क्षमता वाली सरसों की कुल 21 किस्मों को विकसित किया गया है। विकसित सरसों की किस्म आरएच 725 कई सरसों उगाने वाले किसानों के बीच बहुत लोकप्रिय है।

तिलहन विज्ञानियों की मेहनत का है परिणाम

सरसों की इन किस्मों को तिलहन विज्ञानियों की टीम द्वारा विकसित किया गया है। इस टीम में डा. राम अवतार, आरके श्वोराण, नीरज कुमार, मनजीत सिंह, विवेक कुमार, अशोक कुमार, सुभाष चंद्र, राकेश पुनिया, निशा कुमारी, विनोद गोंयल, दलीप कुमार, श्वेता, कीर्ति पट्टम, महावीर और राजबीर सिंह शामिल हैं।

सरसों की ये किस्में सरसों उगाने वाले राज्यों की उत्पादकता को बढ़ाने में मील का पत्थर साबित होंगी। हरियाणा कई वर्षों से सरसों फसल की उत्पादकता के मामले में देश में शीर्ष स्थान पर है। विश्वविद्यालय में सरसों की अधिक उपज देने वाली किस्मों के विकास और किसानों द्वारा उन्नत तकनीकों को अपनाने के कारण संभव हुआ है।- प्रो. वी.आर. काम्बोज, कुलपति, एचएयू, हिंसार।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

अज्ञात समाचार

दिनांक

18.8.22

पृष्ठ संख्या

3

कॉलम

3-6

हकृवि ने विकसित की सरसों की दो उन्नत किस्में

हिसार, 17 अगस्त (विरोद वर्मा) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने सरसों की दो नई उन्नत किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों का हरियाणा के साथ पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों के किसानों को भी लाभ होगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के तिलहन वैज्ञानिकों की टीम ने सरसों की आरएच 1424 व आरएच 1706 दो नई किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों की अधिक उपज और बेहतर तेल गुणवत्ता के कारण राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुर (राजस्थान) में अखिल भारतीय समान्वित अनुसंधान परियोजना (सरसों) की हुई बैठक में हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों में खेती के लिए पहचान की गई हैं। उन्होंने बताया आरएच 1424 किस्म इन राज्यों में समय पर

बुवाई और बारानी परिस्थितियों में खेती के लिए जबकि आरएच 1706 जोकि एक मूल्य वर्धित किस्म है, इन राज्यों के सिंचित क्षेत्रों में समय पर बुवाई के लिए बहुत उपयुक्त किस्म पाई गई है। उन्होंने कहा ये किस्में उपरोक्त सरसों उगाने वाले राज्यों की उत्पादकता को बढ़ाने में मील का पत्थर साबित होंगी।

कुलपति ने बताया कि हरियाणा पिछले कई वर्षों से सरसों फसल की उत्पादकता के मामले में देश में शीर्ष स्थान पर है। यह इस विश्वविद्यालय में सरसों की अधिक उपज देने वाली किस्मों के विकास और किसानों द्वारा उन्नत तकनीकों को अपनाने के कारण संभव हुआ है।

यह है सरसों की किस्मों की विशेषताएं

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि बारानी परीक्षणों में नव विकसित किस्म आरएच 1424 में

लोकप्रिय किस्म आरएच 725 की तुलना में 14 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 26 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की औसत बीज उपज दर्ज की गई है। यह किस्म 139 दिनों में पक जाती है और इसके बीजों में तेल की मात्रा 40.5 प्रतिशत होती है। सरसों की दूसरी किस्म आरएच 1706 में 2.0 प्रतिशत से कम इरूसिक एसिड होने के साथ इसके तेल की गुणवत्ता में सुधार हुआ है, जिसका उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य को लाभ होगा।

यह किस्म पकने में 140 दिन का समय लेती है और इसकी औसत बीज उपज 27 क्विंटल हेक्टेयर है। इसके बीजों में 38 प्रतिशत तेल की मात्रा होती है।

अब तक सरसों की विकसित की हैं 21 उन्नत किस्में

विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं आनुवंशिकी व पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया

कि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय देश में सरसों अनुसंधान में अग्रणी केंद्र है और अब तक यहां अच्छी उपज क्षमता वाली सरसों की कुल 21 किस्मों को विकसित किया गया है। हाल ही में यहां विकसित सरसों की किस्म आरएच 725 कई सरसों उगाने वाले राज्यों के किसानों के बीच बहुत लोकप्रिय है।

तिलहन वैज्ञानिकों की मेहनत का है परिणाम

सरसों की इन किस्मों को तिलहन वैज्ञानिकों की टीम द्वारा विकसित किया गया है। इस टीम में डॉ. राम अवतार, आर.के. श्योराण, नीरज कुमार, मनजीत सिंह, विवेक कुमार, अशोक कुमार, सुभाष चंद्र, राकेश पुनिया, निशा कुमारी, विनोद गोयल, दलीप कुमार, शेता, कीर्ति पट्टम, महावीर और राजबीर सिंह शामिल हैं। कुलपति ने वैज्ञानिकों की इस टीम को बधाई दी और उन्हें भविष्य में भी सरसों की उम्दा किस्मों के विकास का कार्य जारी रखने को कहा।

हरियाणा के साथ अन्य राज्यों के किसानों को भी मिलेगा लाभ : कुलपति



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक क्रिष्ण	18.8.22	4	2-3

हकृवि ने विकसित की सरसों की दो फसलें

हिसार, 17 अगस्त (बिस)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने सरसों की दो नई उन्नत किस्में विकसित की हैं। इससे हरियाणा के साथ-साथ पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों के किसानों को भी लाभ होगा। कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने बताया कि तिलहन वैज्ञानिकों की टीम ने सरसों की आरएच 1424 व आरएच 1706 दो नई किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों की अधिक उपज और बेहतर तेल गुणवत्ता के कारण राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान दुर्गापुर में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (सरसों) की हुई बैठक में हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों में खेती के लिए पहचान की गई है।

ये हैं विशेषताएं

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि बारानी परीक्षणों में नव विकसित किस्म आरएच 1424 में लोकप्रिय किस्म आरएच 725 की तुलना में 14 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 26 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की औसत बीज उपज दर्ज की गई है। यह किस्म 139 दिनों में पक जाती है और इसके बीजों में तेल की मात्रा 40.5 प्रतिशत होती है। सरसों की दूसरी किस्म आरएच 1706 में 2.0 प्रतिशत से कम इन्वर्सिबल एसिड होने के साथ इसके तेल की गुणवत्ता में सुधार हुआ है, जिसका उपयोगिताओं के स्वास्थ्य को लाभ होगा। यह किस्म पकने में 140 दिन का समय लेती है और इसकी औसत बीज उपज 27 क्विंटल हेक्टेयर है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नियोग 21 मिनट्स	17.8.2022	--	--

हकृवि ने विकसित की सरसों की दो आरएच 1424 व आरएच 1706 उन्नत किस्म 140 दिन में पककर तैयार होने वाली इन किस्मों में तेल की मात्रा अच्छी, स्वास्थ्य के लिए भी है लाभदायक : प्रो. काम्बोज

**कुलपति ने कहा : हरियाणा
के साथ अन्य राज्यों के
किसानों को भी मिलेगा लाभ**

चिवाग टाइम्स न्यूज
हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा
कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने
सरसों की दो नई उन्नत किस्में
विकसित की हैं। इन किस्मों का
हरियाणा के साथ पंजाब, दिल्ली, उत्तरी
राजस्थान और जम्मू राज्यों के किसानों
को भी लाभ होगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.
बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते
हुए बताया कि विश्वविद्यालय के
तिलहन वैज्ञानिकों की टीम ने सरसों
की आरएच 1424 व आरएच 1706
दो नई किस्में विकसित की हैं। इन
किस्मों की अधिक उपज और बेहतर
तेल गुणवत्ता के कारण राजस्थान कृषि
अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुर
(राजस्थान) में अखिल भारतीय
समानित अनुसंधान परियोजना
(सरसों) की हुई बैठक में हरियाणा,
पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और
जम्मू राज्यों में खेती के लिए पहचान
की गई है। उन्होंने बताया आरएच
1424 किस्म इन राज्यों में समय पर
बुवाई और खारसी परिस्थितियों में
खेती के लिए जबकि आरएच 1706
जोकि एक मूल्य वर्धित किस्म है, इन
राज्यों के सिंचित क्षेत्रों में समय पर
बुवाई के लिए बहुत उपयुक्त किस्म
पाई गई है। उन्होंने कहा ये किस्में



तिलहन वैज्ञानिकों की मेहनत का है परिणाम

सरसों की इन किस्मों को तिलहन वैज्ञानिकों की टीम द्वारा
विकसित किया गया है। इस टीम में डॉ. राम अवतार,
आर.के. शर्मा, नीरज कुमार, मनजीत सिंह, विवेक
कुमार, अशोक कुमार, सुभाष चंद्र, राकेश पुनिया, निहा
कुमारी, विनोद गोपाल, दलीप कुमार, बेना, कर्ति पट्टण,
महावीर और राजबीर सिंह शामिल हैं। कुलपति ने
वैज्ञानिकों की इस टीम को बधाई दी और उन्हे परिश्रम में
पी सरसों की उन्दा किस्मों के विकास का कार्य जारी
रखने को कहा।

उपरोक्त सरसों उगाने वाले राज्यों की
उत्पादकता को बढ़ाने में मील का
पत्थर साबित होंगे।

कुलपति ने बताया कि हरियाणा
पछले कई वर्षों से सरसों फसल को
उत्पादकता के मामले में देश में शीर्ष
स्थान पर है। यह इस विश्वविद्यालय में
सरसों की अधिक उपज देने वाली
किस्मों के विकास और किसानों द्वारा
उन्नत तकनीकों को अपनाने के कारण
संभव हुआ है।

अब तक सरसों की विकसित की हैं 21 उन्नत किस्में

विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं
आनुवंशिकी व पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ.
एस.के. पाहुजा ने बताया कि हरियाणा कृषि
विश्वविद्यालय देश में सरसों अनुसंधान में अग्रणी केंद्र
है और अब तक यहां अच्छी उपज क्षमता वाली सरसों
की कुल 21 किस्मों को विकसित किया गया है। इतल
ही में यहां विकसित सरसों की किस्म आरएच 725
पाई सरसों उगाने वाले राज्यों के किसानों के बीच
बहुत लोकप्रिय है।

यह है सरसों की किस्मों की विशेषताएं

अनुसंधान निदेशक डॉ. नीत राम
शर्मा ने बताया कि खारसी परीक्षणों में
नव विकसित किस्म आरएच 1424 में
लोकप्रिय किस्म आरएच 725 की
तुलना में 14 प्रतिशत की वृद्धि के
साथ 26 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की
औसत बीज उपज दर्ज की गई है। यह
किस्म 139 दिनों में पक जाती है और

इसके बीजों में तेल की मात्रा 40.5
प्रतिशत होती है। सरसों की दूसरी
किस्म आरएच 1706 में 2.0 प्रतिशत
से कम इस्सिक एचिड होने के साथ
इसके तेल की गुणवत्ता में सुधार हुआ
है जिसका उपभोक्तारों के स्वास्थ्य
को लाभ होगा। यह किस्म पकने में
140 दिन का समय लेती है और
इसकी औसत बीज उपज 27 क्विंटल
हेक्टेयर है। इसके बीजों में 38 प्रतिशत
तेल की मात्रा होती है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	17.8.2022	--	--

हकृवि ने विकसित की सरसों की दो उन्नत किस्में

समस्त हरियाणा ब्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने सरसों की दो नई उन्नत किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों का हरियाणा के साथ पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों के किसानों को भी लाभ होगा।

विराजविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. कामबोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के तिलहन वैज्ञानिकों की टीम ने सरसों की आरएच 1424 व आरएच 1706 दो नई किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों को अधिक उपज और बेहतर तेल गुणवत्ता के कारण राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्यापुर (राजस्थान) में अखिल भारतीय समांन्वित अनुसंधान परियोजना (सरसों) की हुई बैठक में हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों में खेती के लिए पहचान की गई हैं। उन्होंने बताया आरएच 1424 किस्म इन राज्यों में समय पर बुवाई और बारानी परिस्थितियों में खेती के लिए जबकि आरएच 1706 जोकि एक मूल्य वर्धित किस्म है, इन राज्यों के सिंचित क्षेत्रों में समय पर बुवाई के लिए बहुत उपयुक्त किस्म पाई गई है। उन्होंने कहा ये किस्में उपरोक्त सरसों उगाने वाले राज्यों की उत्पादकता को बढ़ाने में मौल्य का पत्थर साबित होंगी।

कुलपति ने बताया कि हरियाणा पिछले कई वर्षों



से सरसों फसल की उत्पादकता के मामले में देश में शीर्ष स्थान पर है। वह इस विश्वविद्यालय में सरसों की अधिक उपज देने वाली किस्मों के विकास और किसानों द्वारा उन्नत तकनीकों को अपनाने के कारण संभव हुआ है।

यह है सरसों की किस्मों की विशेषताएं
अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि बारानी परीक्षणों में नव विकसित किस्म आरएच 1424 में लोकप्रिय किस्म आरएच 725 की तुलना में 14 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 26 क्विंटल प्रति

हेक्टेयर की औसत बीज उपज दर्ज की गई है। यह किस्म 139 दिनों में पक जाती है और इसके बीजों में तेल की मात्रा 40.5 प्रतिशत होती है। सरसों की दूसरी किस्म आरएच 1706 में 2.0 प्रतिशत से कम इरुसिक एसिड होने के साथ इसके तेल की गुणवत्ता में सुधार हुआ है जिसका उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य को लाभ होगा। यह किस्म पकने में 140 दिन का समय लेती है और इसकी औसत बीज उपज 27 क्विंटल हेक्टेयर है। इसके बीजों में 38 प्रतिशत तेल की मात्रा होती है।

का है परिणाम

सरसों की इन किस्मों को तिलहन वैज्ञानिकों की टीम द्वारा विकसित किया गया है। इस टीम में डॉ. राम अंबतार, आर.के. श्यामल, नीरज कुमार, मनजीत सिंह, विवेक कुमार, अशोक कुमार, सुभाष चंद्र, राकेश पुनिया, निशा कुमारी, विनायक गायल, दलीप कुमार, श्वेता, कीर्ति पट्टन, महवीर और राजबीर सिंह शामिल हैं। कुलपति ने वैज्ञानिकों की इस टीम को बधाई दी और उन्हें भविष्य में भी सरसों की उत्पादकता के विकास का कार्य जारी रखने को कहा।

अब तक सरसों की विकसित की है 21 उन्नत किस्में

विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं आनुवंशिकी व पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय देश में सरसों अनुसंधान में अग्रणी केंद्र है और अब तक यहां अच्छी उपज क्षमता वाली सरसों की कुल 21 किस्मों को विकसित किया गया है। छल ही में यहां विकसित सरसों की किस्म आरएच 725 कई सरसों उगाने वाले राज्यों के किसानों के बीच बहुत लोकप्रिय है।

तिलहन वैज्ञानिकों की मेहनत



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

जम-2022

दिनांक

17.8.2022

पृष्ठ संख्या

--

कॉलम

--

सरसों की दो उन्नत किस्में आरएच 1424 व 1706 विकसित की हकूवि वैज्ञानिकों ने

हिसार/ 17 अगस्त/ रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने सरसों की दो नई उन्नत किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों का हरियाणा के साथ पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों के किसानों को भी लाभ होगा। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय के तिलहन वैज्ञानिकों की टीम ने सरसों की आरएच 1424 व आरएच 1706, दो नई किस्में विकसित की हैं। इस टीम में डॉ. राम अवतार, आरके श्योराण, नीरज कुमार, मनजीत सिंह, विवेक कुमार, अशोक कुमार, सुभाष चंद्र, राकेश पुनिया, निशा कुमारी, विनोद गोयल, दलीप कुमार, श्वेता, कीर्ति पट्टम, महावीर और राजवीर सिंह शामिल हैं। इन किस्मों की अधिक उपज और बेहतर तेल गुणवत्ता के कारण राजस्थान कृषि अनुसंधान



संस्थान, दुर्गापुर (राजस्थान) में अखिल भारतीय समान्वित अनुसंधान परियोजना (सरसों) की हुई बैठक में हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों में खेती के लिए पहचान की गई है। उन्होंने बताया आरएच 1424 किस्म इन राज्यों में समय पर बुवाई और बारानी परिस्थितियों में खेती के लिए जबकि आरएच 1706 जोकि एक मूल्य वर्धित किस्म है, इन राज्यों के सिंचित क्षेत्रों में समय पर बुवाई के लिए बहुत उपयुक्त किस्म पाई गई है। उन्होंने कहा ये किस्में उपरोक्त सरसों उगाने वाले राज्यों की उत्पादकता को बढ़ाने में मील

का पत्थर साबित होंगी। कुलपति ने बताया कि हरियाणा पिछले कई वर्षों से सरसों फसल की उत्पादकता के मामले में देश में शीर्ष स्थान पर है। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि बारानी परीक्षणों में नव विकसित किस्म आरएच 1424 में लोकप्रिय किस्म आरएच 725 की तुलना में 14 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 26 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की औसत बीज उपज दर्ज की गई है। यह किस्म 139 दिनों में पक जाती है और इसके बीजों में तेल की मात्रा 40.5 प्रतिशत होती है। सरसों की दूसरी किस्म आरएच 1706 में 2 प्रतिशत से

कम इरूसिक एसिड होने के साथ इसके तेल की गुणवत्ता में सुधार हुआ है जिसका उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य को लाभ होगा। यह किस्म पकने में 140 दिन का समय लेती है और इसकी औसत बीज उपज 27 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इसके बीजों में 38 प्रतिशत तेल की मात्रा होती है। विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं आनुवंशिकी व पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि अब तक यहां अच्छी उपज क्षमता वाली सरसों की कुल 21 किस्मों को विकसित किया गया है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	17.8.2022	--	--

एचएयू ने विकसित की सरसों की दो उन्नत किस्में

हरियाणा के साथ अन्य राज्यों के किसानों को भी मिलेगा लाभ

सिटी पल्स न्यूज, हिंसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने सरसों की दो नई उन्नत किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों का हरियाणा के साथ पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू कश्मीर के किसानों को भी लाभ होगा।

मुख्यपति प्रो. बी.आर. कश्यप ने बताया कि विश्वविद्यालय के तिलहन वैज्ञानिकों की टीम ने सरसों की उत्पत्ति 1424 व अर्धएच 1706 से नई किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों की अधिक उपज और बेहतर तेल गुणवत्ता के कारण राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुर



मुख्यपति प्रो. बी.आर. कश्यप वैज्ञानिकों की टीम के साथ

(राजस्थान) में अधिकार भारतीय सम्मानित अनुसंधान परियोजना (सरसों) की हुई बैठक में हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और

जम्मू कश्मीर में खेतों के लिए पहचान की गई है।

तिलहन वैज्ञानिकों की मेहनत का है परिणाम

सरसों की इन किस्मों को तिलहन वैज्ञानिकों की टीम द्वारा विकसित किया गया है। इस टीम में डॉ. राम अग्रवाल, अर.कं. कश्यप, नीरज

यह है सरसों की किस्मों की विशेषताएं

अनुसंधान निदेशक डॉ. नीरज राम अग्र ने बताया कि कानोले परिवर्णों में नए विकसित किस्म अर्धएच 1424 में लोबडिंग किस्म अर्धएच 725 की तुलना में 14 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 26 लिब्रल प्रति हेक्टेयर की औसत बीज उपज दर्ज की गई है। यह किस्म 139 दिनों में पका जाती है और इसकी बीजों में तेल की मात्रा 40.5 प्रतिशत होती है। सरसों की दूसरी किस्म अर्धएच 1706 में 2.0 प्रतिशत से कम इस्वीक चुंबित होने के साथ इसके तेल की गुणवत्ता में सुधार हुआ है जिसका उपयोगकर्ताओं के स्वास्थ्य को लाभ होगा। यह किस्म पकने में 140 दिन का समय लेती है और इसकी औसत बीज उपज 27 लिब्रल हेक्टेयर है। इसके बीजों में 38 प्रतिशत तेल की मात्रा होती है।

कुमार, मनवीर सिंह, विवेक कुमार, परीप कुमार, शेख, खीरी चंद्र, अशोक कुमार, सुभाष चंद्र, राजेश यादव और राजकीर सिंह शामिल हैं। पुनिय, निराला कुमाठी, विवेक गोपाल,



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

माचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
बढ़ते कदम (दिल्ली)	18.8.2022	--	--

एचएयू ने विकसित की सरसों दो नई किस्म, बीजों में तेल की मात्रा 38 से 40 प्रतिशत, उपज भी अधिक



सरसों की नई किस्म को रीतिज करते कुलपति प्रो. बीआर कांबोज व अन्य सदस्य।

■ संवाददाता, हिसार (हरियाणा)।

हरियाणा के हिसार में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के वैज्ञानिकों ने सरसों की दो नई उन्नत किस्में विकसित की हैं। कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि विश्वविद्यालय के तिलहन वैज्ञानिकों की टीम ने सरसों की आरएच 1424 व आरएच 1706 दो नई किस्में विकसित की हैं।

अधिक उपज और बेहतर तेल गुणवत्ता के कारण इन किस्मों को कृषि अनुसंधान संस्थान, दुयानुर (राजस्थान) में अखिल भारतीय अनुसंधान परिषद (सरसों) की हर्ड क्वेटक में हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तराखण्ड और जम्मू में खेती के लिए अनुमोदित किया

गया है।

उन्होंने बताया आरएच 1424 किस्म इन राज्यों में समय पर बुवाई और बारानी परिस्थितियों में खेती के लिए जबकि आरएच 1706 जो कि एक मूल्य वर्धित किस्म है, इन राज्यों के सिंचित क्षेत्रों में समय पर बुवाई के लिए बहुत उपयुक्त किस्म पाई गई है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जित राय शर्मा ने बताया कि बारानी परिस्थितियों में नव विकसित किस्म आरएच 1424 में लोकप्रिय किस्म आरएच 725 की तुलना में 14 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 26 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की औसत बीज उपज दर्ज की गई है। यह किस्म 139 दिनों में पक जाती है और इसके बीजों में तेल की मात्रा 40.5 प्रतिशत होती

है।

सरसों की दूसरी किस्म आरएच 1706 में 2.0 प्रतिशत से कम इरुसिक एसिड होने के साथ इसके तेल की गुणवत्ता में सुधार हुआ है, जिसका उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य को लाभ होगा। यह किस्म पकने में 140 दिन का समय लेती है और इसकी औसत बीज उपज 27 क्विंटल हेक्टेयर है। इसके बीजों में 38 प्रतिशत तेल की मात्रा होती है।

अब तक सरसों की विकसित की 21 किस्में

विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं अनुसंधानिकी व सौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. एसके पाटुजा ने बताया कि हरियाणा कृषि

विश्वविद्यालय में सरसों की 21 किस्मों को विकसित किया चुका है। सरसों की किस्म आरएच 725 कई सरसों उगाने वाले राज्यों के किसानों के बीच बहुत लोकप्रिय है।

तिलहन वैज्ञानिकों की मेहनत का परिणाम

कुलपति ने बताया कि सरसों की इन किस्मों को तिलहन वैज्ञानिकों की टीम द्वारा विकसित किया गया है। इस टीम में डॉ. राम अक्तर, आरके शंकराम, नीरज कुमार, मनजीत सिंह, धिवेक कुमार, अशोक कुमार, सुभाष चंद्र, रमेश पुनिया, निशा कुमारी, विनोद गोवाल, दलीप कुमार, स्पेता, कीर्ति पट्टन, महावीर और राजवीर सिंह शामिल हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अ जी ह समाचार	18.8.22	12	8

बीएससी एग्रीकल्चर 4 व 6 वर्षीय पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षा के परिणाम घोषित

हिसार, 17 अगस्त (विश्व
वर्मा) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा
कृषि विश्वविद्यालय के बीएससी
एग्रीकल्चर चार वर्षीय पाठ्यक्रम
और बीएससी एग्रीकल्चर छः वर्षीय
पाठ्यक्रमों के परिणाम बुधवार को
घोषित कर दिए गए हैं।

यह जानकारी देते हुए
विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ.
एस.के. महता ने बताया कि
बीएससी एग्रीकल्चर चार वर्षीय
पाठ्यक्रम में अक्षिता, तम्मना और
शुभम ने प्रथम, द्वितीय व तृतीय
स्थान हासिल किया। इसी प्रकार
बीएससी एग्रीकल्चर छः वर्षीय
पाठ्यक्रम में परवीन, रुद्र प्रताप और
वेदांत ने प्रथम, द्वितीय व तृतीय
स्थान हासिल किया है। उन्होंने कहा
उम्मीदवार उपरोक्त परीक्षाओं के
परिणाम व इससे संबंधित नवीनतम
जानकारियों के लिए विश्वविद्यालय
की वेबसाइट पर चेक कर सकते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जमर उजाला	18.8.22	4	6

**एचएयू : बीएससी
एग्रीकल्चर प्रवेश परीक्षा
में अक्षिता-परवीन प्रथम**

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के बीएससी एग्रीकल्चर चार वर्षीय पाठ्यक्रम और बीएससी एग्रीकल्चर छह वर्षीय पाठ्यक्रमों के परिणाम बुधवार को घोषित कर दिया है।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. एमके महता ने बताया कि बीएससी एग्रीकल्चर चार वर्षीय पाठ्यक्रम में अक्षिता प्रथम, तमन्ना द्वितीय और सुभम तृतीय रही। इसी प्रकार बीएससी एग्रीकल्चर छह वर्षीय पाठ्यक्रम में परवीन प्रथम, रुद्र प्रताप द्वितीय और वेदांत तृतीय रही। उन्होंने कहा उम्मीदवार उपरोक्त परीक्षाओं के परिणाम व इससे संबंधित नवीनतम जानकारियों के लिए विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर चेक कर सकते हैं। द्यूरे



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सूचना पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	18.8.22	2	5-6

बीएससी प्रवेश परीक्षा के परिणाम में अक्षिता और परवीन अल्लल

हिसार | चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बीएससी एग्रीकल्चर चार वर्षीय पाठ्यक्रम और बीएससी एग्रीकल्चर छह वर्षीय पाठ्यक्रमों के प्रवेश परीक्षा परिणाम घोषित कर दिए गए हैं।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. एसके महता ने बताया कि बीएससी एग्रीकल्चर चार वर्षीय पाठ्यक्रम में हिसार के जवाहर नगर की अक्षिता, रेवाड़ी जिले की तमना और चरखी

दादरी के फतेहगढ़ गांव के शुभम ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान हासिल किया। इसी प्रकार बीएससी एग्रीकल्चर छह वर्षीय पाठ्यक्रम में परवीन, रुद्र प्रताप और वेदांत ने प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान हासिल किया है। उम्मीदवार उपरोक्त परीक्षाओं के परिणाम व इससे संबंधित नवीनतम जानकारियों के लिए विश्वविद्यालय की वेबसाइट चेक कर सकते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दिन के जागरण	18.8.22	2	2-5

बीएससी एग्रीकल्चर में हिसार की अक्षिता और परवीन ने किया टाप

जासं, हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बीएससी एग्रीकल्चर चार वर्षीय पाठ्यक्रम और बीएससी एग्रीकल्चर छह वर्षीय पाठ्यक्रमों के परिणाम बुधवार को घोषित कर दिए गए हैं। कुलसचिव डा. एसके महता ने बताया कि हिसार के जवाहर नगर की अक्षिता ने 85.5 प्रतिशत अंक पाकर प्रथम, रेवाड़ी के मनाथी तहसील निवासी तमन्ना ने 85.5 प्रतिशत अंक

के साथ द्वितीय स्थान तो चरखी दादरी के गांव फतेहगढ़ की शुभम ने 84.5 के साथ तृतीय स्थान हासिल किया। बीएससी एग्रीकल्चर छह वर्षीय पाठ्यक्रम में खेड़ा निवासी परवीन ने 97 प्रतिशत अंक पाकर प्रथम स्थान, सिरसा के रुद्र प्रताप 95 प्रतिशत अंक पाकर द्वितीय और फतेहाबाद की शीतल कालोनी निवासी वेदांत ने 94 प्रतिशत अंक पाकर तृतीय स्थान हासिल किया है।